# राष्ट्रीय एकता एवं सामाजिक समरसता में खादी एवं चरखा की भूमिका

**रावत कुमार**

गांधीजी ने औपनिवेशिक शासन व्यवस्था से मुक्ति दिलाने के लिए अपने रचनात्मक कार्यक्रम में खादी–चरखा को एक कारगर अस्त्र के रूप में प्रयोग किया। खादी के द्वारा उन्होंने न सिर्फ भारतीय जनता में स्वदेशी की भावना को जागृत करने का कार्य किया, बल्कि भारतीय समाज में राष्ट्रीय एकता एवं सामाजिक समरसता को स्थापित करने का कार्य किया। चरखा–खादी ने आम जनता के बीच स्वरोजगार के माध्यम से आर्थिक शून्यता एवं राजनीतिक शिथिलता को भी दूर करने का कार्य किया। खादी भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन में सत्याग्रह का कवच तो बना ही साथ ही अपरिग्रह एवं अहिंसा को प्रोत्साहन प्रदान करने का अस्त्र बना।

गांधीजी चरखा–खादी के द्वारा उन वदेशी वस्तुओं व नियमों का परित्याग करना चाहते थे भारतीय समाज को क्षति पहुँचाता हो। उनका मानना था खादी जहाँ मानवीय मूल्यों का प्रतिनिधित्व करती है तो मिल के बने वस्त्र धात्विक मूल्यों का अधिक प्रतिनिधित्व करती है। असहयोग आन्दोलन के सिलसिले में अनेक लोगों को जेल जाना पड़ा। उसमें कुछ ऐसे भी थे, जिन्होंने खादी पहनने का व्रत ले रखा था। जेल के मामूली नियमों के अनुसार अधिकारियों ने उनके खादी के कपड़े उतरवाकर उन्हें जेल के कपड़े पहनने को मजबूर किया तथा कातने के लिए चरखा और तकली देने से भी इंकार कर दिया। जिसके कारण वे अपने व्रत पर डटे रहे। उनको अनशन करना पड़ा, जेल के नियम तोड़ने के मुद्दे पर जेल में उन्हें नाना प्रकार की यातनाएँ भी भोगनी पड़ी।